eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरणीय चेतना

दिव्या कुमारी[1], डॉ० अरुण कुमार[2]
[1]शोधार्थिनी राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर उ0प्र0
[2]एसोसिएट प्रोफेसर राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर उ0प्र0

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Oct 2024

Abstract

पर्यावरण विभिन्न भौतिक, रासायनिक और जैविक घटकों से निर्मित है जो एक दूसरे के साथ और मानवीय गतिविधियों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। पर्यावरण का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यावरण के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन की कल्पना कर पाना भी सम्भव नही है।

समकालीन कविता मनुष्यों और पर्यावरण का अध्ययन करती है। यह अन्वेषण करती है कि पर्यावरण मानवीय व्यवहारों तथा अनुभवों को कैसे प्रभावित करता है और मनुष्य पर्यावरण को कैसे प्रभावित करता है। यह क्षेत्र व्यक्तियों और उनके परिवेश के बीच संबंध पर केन्द्रित है। यह ध्वनि प्रदूषण, शहरी गिरावट, जनसंख्या घनत्व और भीड़भाड़ आदि जैसी चिंताओं से संबंधित है।

समकालीन कवियों ने पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं का कई प्रकार से चिंतन प्रस्तुत किया है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता तापमान, कृषि में रासायनिक दुर्बल पदार्थों का अनियंत्रित प्रयोग आदि अनेक कारणों से पर्यावरण दुर्बल होता जा रहा है। समकालीन कवियों ने जमीन, जल, जंगल और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले कारणों और समस्याओं को अपनी कविता में उभारा है।

बीज शब्दः– पर्यावरण, जलवायु, परिवेश, मानवीय व्यवहार, प्रदूषण, समकालीनता, पर्यावरणीय चेतना।

Introduction

पर्यावरण प्राकृतिक और मानव निर्मित परिवेश है। जिसमें कोई व्यक्ति पशु या पेड़–पौधे जीवनयापन कार्य करते हैं। पर्यावरण विभिन्न रासायनिक, भौतिक और जैविक घटकों से बना है। जो एक दूसरे के साथ और मानवीय गतिविधियों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। पर्यावरण आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों से भी प्रभावित होता है। जो मानव मूल्यों, व्यवहारों, संस्थानों और दृष्टिकोणों को आकार देते हैं। पर्यावरण अध्ययन पर्यावरणीय समस्याओं के कारणों, समाधानों और परिणामों को समझने, उनका मूल्यांकन विश्लेषण और समाधान करने के लिए मानविकी और सामाजिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान से ज्ञान को एकीकृत करता है।

लगभग प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्रियाओं द्वारा पर्यावरण को सकारात्मक और निषेधात्मक रूप से प्रभावित करता है। जब भी कोई व्यक्ति वाहन चलाता है, खाना बनाता है, स्प्रे का प्रयोग करता है, धूम्रपान करता है आदि तो पर्यावरण प्रभावित होता है। मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पर्यावरण को जो नुकसान पहुंचता है। उसे हम प्रत्यक्ष रूप से देख नहीं पाते और मानवीय क्रियाओं का पर्यावरण पर यह दीर्घकालिक प्रभाव आने वाली पीढ़ियों के जीवन को भी प्रभावित करेगा। जलवायु का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि मनुष्य का रहन, सहन, खान–पान, स्वास्थ्य, उसकी वेशभूषा सभी पर जलवायु का प्रभाव पड़ता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। सभ्यता के उद्भव से अबतक इसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। विश्व के सभी शहर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

व महानगर शहरीकरण से प्रभावित हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन से सागर और नदियों के किनारे पर बसे लोगों पर बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है, ऋतु में परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि हो रही है। पृथ्वी पर रहने वाले जीवों के लिए जलवायु में हो रहे नकारात्मक परिवर्तन बहुत ही घातक सिद्ध हो रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को 21 वीं सदी की शुरुआत से ही व्यक्ति के स्वास्थ्य, आर्थिक संभावनाओं, भोजन और पानी की आपूर्ति को प्रभावित करने वाली गंभीर समस्याओं के रूप में पहचाना गया है। यह स्वीकार किया गया है कि इन पर्यावरणीय मुद्दों में मानवीय व्यवहार का प्रमुख योगदान है। मानवीय व्यवहार और जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखते हुए पर्यावरण समस्याओं से बचने के लिए, व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने के लिए एक रणनीति खोजना समकालीन कवियों की एक निरंतर और विकासशील चिंता है।

समकालीन कविता में अपने समय के साथ जितनी सीधी और उग्र मुलाकात होती है, उतनी पहले की कविता में नहीं। समकालीन कविता में सामान्य या शाश्वत तत्वों के प्रति उतना लगाव और आकर्षण नहीं है, जितना पहले की कविताओं में है। समकालीन कविता यथार्थ परिस्थितियों से जन्मी विचारशील कविता है। यह अपनी परिस्थितियों के अनुसार नए रूपाकार गढ़ती है और विश्व में घट रही घटनाओं का दस्तावेज प्रस्तुत करती है। समकालीन कविता का सरोकार केवल मानव तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसकी परिधि में समग्र प्रकृति समाहित है। मानव इन तत्वों के संतुलन में विकार पैदा कर रहा है। समकालीन कविता का सरोकार पर्यावरण विकृति और उसके परिणाम भी है।

समकालीन कवि अपनी रचनाओं के द्वारा लोगों को जागरूक कर रहे हैं। पर्यावरण की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। हमें यह बताने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं कि पर्यावरण को असंतुलित कर हम विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। प्रौद्योगिकीकरण के विकास से पृथ्वी असंतुलित हो गई है। मानव जीवन पाँच तत्वों पर आश्रित है– पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और गगन। इन तत्वों का अस्तित्व में रहना बेहद आवश्यक है क्योंकि इनके बिना मानव जीवन संभव नहीं है। लेकिन वर्तमान समय में मनुष्य अपनी विलासिता और भौतिकता की चकाचौंध में इतना स्वार्थी हो गया है कि वे प्राकृतिक संपदाओं का दोहन कर रहा है। इन सभी बढ़ते संकटों को देख समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इन समस्याओं की ओर दृष्टिपात किया है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक हमारे साहित्य में पर्यावरण के संबंध में जो लिखा गया वहाँ मात्र उद्दीपन या आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण हुआ है। समकालीन दौर में जो साहित्य लिखा जा रहा है उसमें पर्यावरण चेतना सम्मिलित है। पर्यावरण में असंतुलन के कारण पर्यावरण चेतना का जन्म हुआ। पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए हम प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। वर्तमान में बढ़ते तकनीकीकरण एवं औद्योगीकरण के जीवन में केदारनाथ सिंह, रामदरश मिश्र, अरुण कमल, त्रिलोचन, अशोक वाजपेयी, शिशुपाल, ज्ञानेन्द्रपति, नरेश सक्सेना आदि जैसे कवियों ने अपनी कविताओं में पर्यावरणीय तत्वों को उभारने की कोशिश की है।

उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को वृक्षों के प्रति विसंगत या संवेदनहीन बना दिया है। कवि नरेश सक्सेना एक छोटी कविता के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि तब होगी जब मैं इस प्रकृति में एक पेड़ बचा सकूँगा। वे लिखते हैं कि––

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

अंतिम समय जब कोई नहीं जाएगा साथ
एक वृक्ष जाएगा
अपनी गौरैयों –गिलहरियों से बिछुड़कर
साथ जाएगा एक वृक्ष
अग्नि में प्रवेश करेगा वही मुझसे पहले
"कितनी लकड़ी लगेगी"
श्मशान की टालवाला पूछेगा
गरीब से गरीब भी सात मन तो लेता ही है
लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में
कि बिजली के दाहघर में हो मेरा संस्कार
ताकि मेरे बाद
एक बेटे और एक बेटी के साथ
एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में!
पर्यावरण और पेड़–पौधों के प्रति संवेदना का यह अप्रतिम उदाहरण है।

"भूमंडलीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। विदेशी कंपनियों के आने से न केवल शहर बल्कि गाँव का भी रूप बदलता दिखाई दे रहा है। ———————————— इस पूँजीवादी व्यवस्था ने व्यक्ति को अपनी जड़ों से अलग कर दिया है और हर मकान दुकान में परिवर्तित होता दिखाई दे रहा।" अरुण कमल के काव्य संग्रह 'नए इलाके में' मे संग्रहित पहली कविता 'नए इलाके में' की कुछ पंक्तियाँ हैं–

"इन नए बस्ते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए–नए मकान
मैं अक्सर रस्ता भूल जाता हूँ
''''''''
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादोंमें लौटा हूँ।"

कुंवर नारायण की कविताओं में प्रकृति के प्रति आकर्षण मिलता है। इनकी कई कविताओं में यह प्रकृति का आह्वान करते प्रतीत होते हैं। 'चक्रव्यूह' और 'परिवेशःहम तुम' आदि इनकी कविताओं को प्रकृति परिवेश में देखा जा सकता है।

नदियों की पवित्रता एवं स्वच्छता नष्ट होती जा रही है। नदी जो पहले स्वच्छ हुआ करती थी अब वह मैली कुचौली एवं क्षीण होती जा रही है। नदियों को प्रदूषित होता देख ज्ञानेंद्रपति ने 'नदी और साबुन' कविता में नदी को लेकर चिंता व्यक्त की है। नदी और साबुन कविता "गंगातट" काव्य संग्रह में संग्रहित है। वे इस कविता में नदी से पूछते हैं कि–

"नदी!

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

तू इतनी दुबली क्यों है?
और मैली कुचौली''''''
''''''

स्वार्थी कारखानों का तेजी पेशाब झेलते
बैंगनी हो गई तुम्हारी शुभ्र त्वचा
हिमालय के होते भी तुम्हारे सिरहाने
हथेली भर की एक साबुन की टिकिया से
हार गई तुम युद्ध"
जबकि केदारनाथ सिंह की संवेदना है कि–
"वह चुपचाप इसी तरह बह रही
पिछले कई सौ सालों से
एक नाम की तलाश में
मेरे गाँव की वह पतली–सी नदी
कहीं कोई मरता है
लोग उठाते हैं
और नदी जहाँ सबसे ज्यादा चुप और अकेली होती है
उसी के आजू–बाजू फूकआते हैं।"

पोलिथिन का प्रयोग हम सभी प्रतिदिन प्रचुर मात्रा में करते हैं। हर छोटी–मोटी वस्तु को रखने के लिए हम पोलिथिन का इस्तेमाल करते हैं। इसके अत्यधिक प्रयोग ने वायु, जल, भूमि को दूषित कर दिया है। इसका प्रयोग मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हो रहा है। इन समस्याओं को देखते हुए लीलाधर मंडलोई ने 'पोलिथिन की थैलियाँ' नामक शीर्षक से कविता में कवि ने पोलिथिन से उत्पन्न भयावह त्रासदी की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। जो इस प्रकार है–

"करोडों या अरबों
कितनी हो सकती हैं
पोलिथिन की थैलियाँ
कितनी नदियों का दम घुट सकता है
इन थैलियों में
पोलिथिन! पोलिथिन!
तंग हूँ मैं इस पोलिथिन से।"
जंगल, पहाड़, मिट्टी जैसे घटते प्राकृतिक संसाधनों के कारण रघुवीर सहाय को यह चिंता सताती है कि प्रकृति मात्र स्मृति का विषय बनकर न रह जाए। इसी चिंता को व्यक्त करते हुए वह लिखते हैं कि–
"वे पहाड़, जंगल, मिट्टी के मैदान हरे
छोटे हो गए हैं जो इतिहास में बड़े देश के
प्रमाण थे
इनकी विशालता का गुणगान

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 10, October 2024

अब सुनाई नहीं पड़ता।"

अतः समकालीन कविता के रचनाकारों ने किसी न किसी रूप में पर्यावरणीय क्षति जैसी चिंताओं पर केंद्रित कविता लिखी हैं।

निष्कर्ष– पर्यावरण की समस्या समकालीन समय में चर्चित समस्याओं में से एक है। समकालीन कविता के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण क्षति को रोकने और लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का भरसक प्रयत्न किया है और कर रहे हैं। समकालीन कवि पृथ्वी को पर्यावरण और सामाजिक गिरावट से बचाने और इस ग्रह के निवासियों की भलाई के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इन रचनाकारों से यह पता चलता है कि लोग अपने आसपास के वातावरण को कैसे देखते हैं, कैसे प्रतिक्रिया करते हैं तथा कैसे इसका शहरी नियोजन और पर्यावरणीय स्थिरता जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक और व्यापक प्रभाव पड़ा है। समकालीन कविता के कवि जल, जंगल, जमीन और हमारे आसपास के वातावरण का मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा जो हनन हो रहा है उस ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। जिससे पर्यावरण के विनाश को बचाया जा सकता है और स्वच्छ पर्यावरण की कामना की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1– किशन कालजयी, संवेद पत्रिका, स्वामी प्रकाशन, जुलाई 2013, दिल्ली
2– अरुण कमल– नये इलाके में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1906
3– विश्वनाथप्रसाद तिवारी, समकालीन हिंदी कविता, राजकमल प्रकाशन, 2010
4– सम्पादक डॉ० ए– एस– सुमेश, समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श
5– हरिशंकर परसाई, प्रगतिशील वसुधा, अप्रैल–जून 2008
6– ज्ञानेन्द्रपति, गंगातट काव्य संग्रह, राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999
7– रणजीत सिंह, समकालीन हिंदी कविता (काव्य संकलन)
8- www-amarujala-com
9- www.egyankosh-ac-in
10- www-re&thinkingthefuture-com
11- www-jagran-com